आज की मुरली पर सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 17-07-14

बाबा ने आज बार-बार हमें अशरीरी (देही-अभिमानी) बनने का अभ्यास करने को कहा जिसे की अन्त समय जब हम आत्मा अपना शरीर छोडे तो एक बाप की ही याद रहे.

में आत्मा अशरीरी आई थी अब अशरीरी होकर मुझे वापस अपने धर-परमधाम बाबा के पास जाना हैं.

में आत्मा एक ऐक्टर हूँ. इस बेहद के सृष्टि चक्र में पार्ट बजाती हूँ. मेंने सतयुग से लेकर कलियुग के अन्त तक अलग-अलग कोशच्युम (शरीर) लेकर पार्ट बजाया, अब मुझे वापस अपने धर-परमधाम लौटना हैं.

भक्ति में हम जिसे बार-बार पुकारते थे, आ कर हमें ये नर्क से निकालो. वही भगवान, परमप्रिय-परमपिता-परमआत्मा शिवबाबा, हमें साथ ले जाने के लिए आये हैं.

स्वयं परमपिता-परमात्मा, गाइड बनकर, मुझ आत्मा को परमधाम जाने का रास्ता बताते हैं और बाबा ही मुझे साथ में लेकर जायेंगे. बाबा ने कहा हैं की मेरे लाडले बच्चे में तुम्हें अपने नैनों पर बैठाकर ले जाऊंगा.

अपनी स्थिति देही-अभिमानी बनाने के लिए नीचे दिये हुए स्वमान की प्रैक्टिस करनी हैं.

में आत्मा हूं. भृंकुटि में चमकता हुआ सुंदर सितारा हूं.
में आत्मा हूं. शांत और पवित्र स्वरूप हूं. शांति और पवित्रता मेरा स्वधर्म हैं.
में आत्मा हूं. सत्य हूं. चैतन्य हूं. आनंद स्वरूप हूं.
में आत्मा हूं. अजड, अमर, अविनाशी हूं.
में आत्मा हूं. चैतन्य शक्ति हूं. ये शरीर जड़ हैं. में चैतन्य शक्ति आत्मा ही शरीर को चला रही हूं.
में आत्मा हूं. शरीर मेरा वस्त्र हैं.

सारे ज्ञान का सार हैं, मेरा ये अन्तिम जन्म हैं, मुझे खुशी-खुशी ये पुराने शरीर को त्याग कर मेरे प्यारे-प्यारे बाबा के साथ अब घर जाना हैं, फिर श्रीकृष्ण के साथ सतयुग में आना हैं.

"बाबा के साथ घर जाना हैं, फिर श्रीकृष्ण के साथ आना हैं." ☺ ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email: a.brahmin.soul@gmail.com .